Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 5, May - 2023 Publication Date: 31/05/2023

DOIs:10.2018/SS/202305012 --:-- Research Paper / Article / Review

समतामूलक शिक्षा और सावित्रीबाई फुले : राष्ट्रीय शिक्षा नीति

शरद कुमार

शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र), छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

ईमेल - sharadkumar8090@gmail.com

सारांश : भारतीय शिक्षा के विकास के साथ समय समय पर विभिन्न नीतियों का निर्माण किया गया | भारत की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 तथा दूसरी 1986 तत्पश्चात 1992 में संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई | वर्ष 2020 में भारत सरकार ने एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रस्तुत की इसमें भारतीय ज्ञान परम्परा को केंद्र मानते हुए व्यापक परिवर्तन किये | महान नारीवादी, समाजसुधारक एवं कवयित्री सावित्रीबाई फुले के विचार को पढ़ा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अवलोकन किया तो पाया की इनके विचार अध्याय-6 में परिलक्षित हो रहे हैं |

सावित्रीबाई फुले नारी मुक्ति के लिए क्रांति की अलख जगाई थी उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए तत्कालीन समाज से लड़ी | 19वीं सदी के सभी पारम्परिक बेड़ियों और रुढियों को तोड़ने का काम किया था वह ऐसे समय में महिलाओं के लिए लड़ी थी जब महिलाओं को भोग की वस्तु समझा जाता था | वह चाहती थी की सभी वर्गों के महिलाओं को बिना भेदभाव के शिक्षा, सामाजिक न्याय, स्वतन्त्रता और समानता प्राप्त हो इसका एक मात्र और प्रभावी साधन समतामूलक शिक्षा है | समतामूलक शिक्षा न सिर्फ स्वयं में बल्कि समाज निर्माण में भी महत्वपूर्ण है जिसमे प्रत्येक नागरिक को बराबरी का दर्जा प्राप्त होता है | इस शोधपत्र के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि समतामूलक शिक्षा की बात क्यों करती थी |

मुख्य शब्द : स्त्री शिक्षा में विशेष योगदान, महिला सशक्तिकरण में भूमिका, समतामूलक शिक्षा में योगदान |

1. प्रस्तावना:

भारत में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक अनेक विभूतियों ने जन्म लिया और इन विभूतियों ने अपने सामाजिक व्यक्तित्व के माध्यम से अशिक्षा से भरे समाज को समय समय अपने ज्ञान व समझ से एक नई दिशा प्रदान की वरन समाज के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा गाँधी , रविन्द्र नाथ टैगोरे, श्री अरविन्द, रामकृष्ण परमहंस तथा विवेकानन्द जैसे दार्शनिक व शिक्षाशास्त्री ने अपने विचारों से शिक्षा की ज्योति को और अधिक विभूषित किया है | इसी महान विभूतियों में नारीवादी शिक्षिका, समाजसुधारक, समतामूलक शिक्षा की अग्रणी तथा कवयित्री सावित्रीबाई फुले का शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी व महत्वपूर्ण स्थान रहा है | इनका जन्म 03 जनवरी 1831 ई. को महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र के सतारा जिले के नायगांव में हुआ था | इन्होने सभी वर्गों के महिलाओं को उचित स्थान दिलाने के लिए तात्कालिक समाज से लड़ाई लड़ी | पहले शिक्षा कुछ ही वर्गों को दी जाती थी लेकिन सावित्रीबाई फुले ने लैंगिक असमानता का कड़ा विरोध किया उन्हें समाज द्वारा तिरस्कार भी किया गया वह अपने कर्तव्य मार्ग से विचलित नही हुयी |

जब हम स्त्रियों की शिक्षा के बारे में बात करते है तो सबसे पहले पहले सावित्रीबाई का नाम सामने आता उन्होंने सबसे पहले लडकियों की शिक्षा के लिए 1848 ई. पुणे में पहला स्कूल खोला जिसमे सभी वर्गों की लड़कियां पढ़ती थी उनके साथ भेदभाव रहित व्यवहार और शिक्षा दी जाती थी यहीं से समतामूलक शिक्षा की नीव पड़ी |

जब लड़कियों को चहारदीवारी के अंदर रखा जाता था तब इन्होने शिक्षा के माध्यम से उन्हें जगाने का काम किया आज यह स्थति है कि इनके विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिखाई दे रहे रहे है जिस तरह तात्कालिक समाज में लडकियों को पढ़ने नही दिया जाता था उनके साथ भेदभाव किया जाता था लेकिन आज ऐसा नही है वह पढ़ सकती है आगे बढ़ सकती है कहीं न कहीं समतामूलक शिक्षा और सावित्रीबाई की ही देन है |

2. स्त्री शिक्षा में विशेष योगदान :

हम कह सकते है कि उस समय लड़कियों की शिक्षा किसी धर्मयुद्ध से कम नही थी सीखने की उनकी ललक उनकी जिज्ञासा उनके अंदर पढने की दृढ़ इच्छा जागृत हुयी और अपने पति ज्योतिबा फुले से पढना लिखना सीखा | अध्यापन का शौक होने के कारण उन्होंने दो वर्षीय प्रशिक्षण मिस फरार इंस्टीट्यूट अहमदनगर से किया वह पुणे के मिशेल स्कूल में पहली महिला शिक्षिका बनी वह समय के युवा लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा के प्रति प्रेरित व् अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करती थी | जब महिलाओं के अधिकार न के बराबर थे तब वह अपने पति के साथ मिलकर भिंडवाडा पुणे 1848 में महिला स्कूल की शुरुआत की उस समय विभिन्न जातियों की लगभग 8 लड़कियों ने दाखिला करवाया था |

इन्होने तत्कालीन समाज के द्वारा बनाये गये नियमों को तोड़कर स्त्रियों के शिक्षा का द्वार खोला और स्त्री शिक्षा की नींव रखी | स्त्रियो को भेदभाव रहित शिक्षा देना चाहती थी जो सम्मान पुरुषों को मिल रहा है वही सम्मान व अधिकार स्त्रियों को भी दिलाना चाहती थी जिससे समाज के अंदर समता व समानता आये | स्कूलों में बच्चों को रोकने के लिए छात्रवृत्ति की भी शुरुआत की ताकि बच्चे स्कूल छोड़कर न जा सके इन्होने स्कूल में तरह तरह के खेल पेंटिंग व लेखनशैली जैसी प्रतियोगिता भी आयोजित करती थी | उसमे से एक छात्रा मुक्तासाल्वे द्वारा लिखित एक निबंध साहित्य जगत का एक प्रसिद्ध लेख बना |

3. महिला सशक्तिकरण में भूमिका :

भारत की पहली आधुनिक नारीवादी सावित्रीबाई फुले ने अपने पति के साथ मिलकर महिलाओं को सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभाई थी जब भारत की महिलाये समस्या से सूझ रही थी तब वह खुद अपमानित होकर उन्हें गुलामी के जीवन से निकालने का अद्वितीय कार्य किया | एक समय जब महिलाये केवल भोग की वस्तु समझी जाती थी तब उन्होंने शिक्षा रूपी चिंगारी को जन्म दिया जिससे शिक्षा और समाज में समता आई | इन्होने 19वीं सदी में महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया |

बाल विवाह, सती प्रथा, छुआछूत और जातिआधारित भेदभाव जैसी बुराईयों को ख़त्म करने की कोशिश की और विधवा विवाह और अंतर्जातीय विवाह की वकालत भी की | उन्होंने महिलाओ पर लगाये गये सीमा को तोडने का काम किया | इन्होनें सशक्तिकरण का माध्यम चुना जिससे जागरूकता, कार्यशीलता, बेहतर नियंत्रण के लिए प्रयास के द्वारा व्यक्ति अपने विषय में निर्णय लेने के लिए समर्थ एवं स्वतंत्र होता है | इस दृष्टि से देखें तो नारी का सशक्तिकरण एवं सर्वांगीण व् बहुयामी दृष्टिकोण है यह व्यक्तित्व निर्माण की मुख्य धारा में महिलाओ की पर्याप्त व सक्रिय भागीदारी में विश्वास रखता है इसके माध्यम से महिलाएं अपने आर्थिक स्वावलंब, राजनैतिक भागीदारी व सामाजिक विकास के लिए अपनी शक्तिओ व् संभावनाओ, क्षमताओ, योग्यताओ व जिम्मेदारियो के प्रति जागरूक होती है |

4. समतामूलक शिक्षा में योगदान :

सावित्रीबाई फुले केवल ज्ञान व डिग्रीयां प्राप्त नहीं कर रही थी और न ही प्राप्त करवाना चाहती थी उनका विचार था की शिक्षा सभी को स्वतंत्र मन से मिलनी चाहिए | वह कहा करती थी की भोजन, आवास और कपड़े जैसी मूलभूत आवश्यकताओ से कही ज्यादा जरुरी शिक्षा है इसीलिए उन्होंने पिछड़ेपन का कारण भी शिक्षा को ही माना | समाज में सभी को बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए, एक पंक्ति में बैठकर शिक्षा पाने के लिए समतामूलक शिक्षा की वकालत की | वह कहती थी कि शिक्षा सामाजिक न्याय और समानता हासिल करने का एक मात्र प्रभावी साधन है | समतामूलक शिक्षा न सिर्फ स्वयं में एक आवश्यक लक्ष्य है बल्कि समतामूलक समाज निर्माण के लिए भी अनिवार्य कदम है | दुर्भाग्य से लैंगिक, सामाजिक-आर्थिक जैसे कारको के आधार पर होने वाले पूर्वाग्रह और पक्षपात के कारण लोगो की शिक्षा व्यवस्था से लाभान्वित होने की क्षमता प्रभावित होती है | वह चाहती थी कि समाज में एक समतामूलक शिक्षा की नीव पड़े जिससे सभी बच्चो के सीखने के सामान अवसर उपलब्ध हो और सभी लैंगिक व सामाजिक वर्गों की शिक्षा में भागीदारी और सीखने के प्रतिफल के स्तर पर समता सुनिश्चित हो |

5. निष्कर्ष :

सावित्रीबाई फुले ने समतामूलक शिक्षा पर जोर देकर समस्त नारी जगत का कल्याण किया है उनका मानना था की सभी वर्गों की महिलाओ को एक सामान, बिना भेदभाव की शिक्षा मिले | आज इसका परिणाम यह हुआ की महिलाये हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही है वह राजनैतिक, शिक्षा, वैज्ञानिक, गीतकार, संगीतकार, डॉक्टर आदि ऐसे तमाम क्षेत्र है जहाँ वह दिन प्रतिदिन तरक्की कर रही है रोज नए नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है जो सपना सदियों पहले सावित्रीबाई फुले द्वारा देखा गया था कि समाज में समतामूलक शिक्षा दी जाये वह आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पूरा कर रही है |

सन्दर्भ :

1. दास. अमित. (2021, मई-जून). ए एजुकेशनल कॉन्ट्रिब्यूशन ऑफ़ सावित्रीबाई फुले इन 21th सेंचुरी इण्डिया. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ट्रेंड्स साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट.*5(4), 1-6 https://issuu.com/ijtsrd.com/docs/219_educational_contribution_of_savitribai_phule_i
2. सेन. सुबीर. (2021, जून). सावित्रीबाई फुले द फर्स्ट टीचर एंड सोशल रिफॉर्मर इन 19th सेंचुरी ऑफ़ इण्डिया. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिप्लीनरी रिसर्च.*7(6), 1-4 https://doi.org/10.36713/epra7439
3. डेस्क. एक्सप्लेन. (2020, जनवरी 3). सावित्रीबाई फुले इम्पैक्ट ऑन वीमेंस एजुकेशन इन इण्डिया. *इंडियन एक्सप्रेस.* https://indianexpress.com/article/explained/explained-savitribai-phules-impact-on-womens-education-in-india-6198439/
4. रंगन. कस्तूरी. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय. अध्याय- 6. 38. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf
5. कुमार. संतोष. (2019, नवम्बर). सावित्रीबाई फुले कॉन्ट्रिब्यूशन टूवार्ड्स इंडियन सोसल एलिमेंट- अ स्टडी. *इन जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीस इनोवेटिव रिसर्च.* 6(11), 25-32 https://www.jetir.org/papers/JETIR1907P04.pdf
6. तिलक. रजनी. (2019). भारत की पहली शिक्षिका सावित्रीबाई फुले. *दिल्ली. स्वराज प्रकाशन.* 11-13
7. गजभिये. संजय. (2019). सावित्रीबाई फुले के भाषण. नई दिल्ली. *सम्यक प्रकाशन.*18-20
8. कीर्ति. विमल. (2018). सचित्र फुले जीवनी. नई दिल्ली. सम्यक प्रकाशन. 39-42
9. राय. विनीत. रीता. (2018). फर्स्ट इंडियन वीमेन टीचर सावित्रीबाई फुले : बायोग्राफी ऑफ़ सावित्रीबाई फुले. *नई दिल्ली. एजुकेशन पब्लिकेशन. 51-53*
10. अम्बेडकर. कारवां. (2017, सितम्बर 5). सावित्रीबाई फुले द मदर ऑफ़ मॉडर्न एजुकेशन. *सबरंग इण्डिया.* https://sabrangindia.in/ann/savitribai-phule-mother-modern-education
11. नुपुर. प्रीती. अलोक. (2016, सितम्बर 5). सावित्रीबाई फुले : इण्डियाज फर्स्ट फीमेल टीचर एंड सोसल वर्कर. *फेमिनिज्म इन इण्डिया.* https://feminisminindia.com/206/09/05/essay-life-savitribai-phule/
12. चिमुरकर. राहुल. (2015, दिसम्बर 11). सावित्रीबाई फुले : द मदर ऑफ़ मॉडर्न एजुकेशन. *काउंटर करेंट.* . https://www.countercurrents.org/chimurkar111215.htm
13. पाई. सुचिस्मिता. (2013, अक्तूबर 15). सावित्रीबाई फुले : द मदर ऑफ़ मॉडर्न गर्ल्स एजुकेशन इन इण्डिया. *द बेटर इण्डिया.* https://www.thebetterindia.com/8464/tbi-heroes-savitribai-the-mother-of-modern-girls-education/